परिशिष्ट

स्वर्गीय चंद्रगुप्त विद्यालंकार की पत्नी स्वर्णलता जी से साक्षात्कार

(स्थल – मुम्बई, दिनांक – 25 जून, 1997
शाम 6.30 से रात 9.30 बजे तक)

मैं – **चंद्रगुप्त विद्यालंकार जी की जन्मतिथि कौनसी है ?**

स्वर्णलता – 4 दिसम्बर, 1906 ।

मैं – विद्यालंकार जी का जन्मस्थान कौन सा है ?

स्वर्णलता – पश्चिम पंजाब के मुजफ्फरगढ़ जिले में सिन्ध नदी के किनारे स्थित कोट–अद्दू नामक कस्बे में उनका जन्म हुआ । अब यह पाकिस्तान में आता है ।

मैं – चंद्रगुप्त जी की माता का नाम बताइए ।

स्वर्णलता – हमारी शादी के बहुत पहले ही उनकी माताजी का देहान्त हो चुका था तब विद्यालंकार जी भी बहुत छोटे थे । अतः उनके बारे में ज्यादा जानकारी मुझे मालूम नहीं । उनका नाम भी याद नहीं ।

मैं – चंद्रगुप्त जी के पिताजी और स्वभाव के बारे में ?

स्वर्णलता – उनके पिताजी का नाम लाला श्री टेकचन्द है वे प्रसिद्ध जमीनदार थे । अच्छे विचारवंत भी थे । आदर्श व्यक्तित्व के धनी थे । अपने परिवार के प्रति वे हमेशा सजगता का व्यवहार करते थे । उनका स्वभाव बहुत ही प्रेमी था लेकिन उन्हें गुस्सा भी जल्दी आता था । उनकी खूब खेतीबारी थी । उन्हें वे अच्छी तरह सँभालते थे । वे आर्यसमाजी थे ।

मैं – विद्यालंकार जी का बचपन कैसा बीता और कहाँ बीता ?

स्वर्णलता – उनके पिताजी ने उन्हें बाल्यावस्था में ही परिवार से विमुक्त कर दूर हरिद्वार के पास गुरूकुल कांगडी में पढ़ने के लिए भेज दिया था । इसी कारण पूरा बचपन कुरूकुल कांगड़ी के अनुशासनयुक्त माहौल में बीता यहाँ वे अध्यापक खूब मारते–पीटते थे इसी कारण उनका कोमल हृदय दुखी था । उनका स्वभाव हटी था । वे किसी के बन्धन को नहीं मानते थे । बचपन से ही उनकी रूचि पढ़ने में ज्यादा थी । हर रोज देर रात तक अध्ययन करते थे । अतः सुबह देर से उठते थे ।गुरूकुल में रोज

– सुबह 4 बजे उठने का नियम था । वे सुबह जल्दी नहीं उठते थे इसी कारण गुरूजनों से उनकी खूब पीटाई होती थी अतः वे वहाँ दुखी रहते थे ।

मैं – उनकी मातृभाषा कौनसी थी ? वे कौन–कौनसी भाषा जानते थे ?

स्वर्णलता – उनकी मातृभाषा हिंदी ही थी तथा हिंदी के अतिरिक्त वे संस्कृत और अंग्रेजी भाषा अच्छी तरह जानते थे ।

मैं – उन्होंने शिक्षा कहाँ ली और कहाँ तक ? तथा नौकरी कब और कहाँ शुरू की ?

स्वर्णलता – उनकी सभी शिक्षा गुरूकुल कांगड़ी में हुई । उन्होंने लगातार 16 वर्ष तक वहाँ अध्ययन किया । गुरूकुल ने उन्हें विद्यालंकार उपाधि से विभूषित किया । गुरूकुल से निकले तो लाहौर में उन्होंने अपना पब्लिकेशन शुरू किया । सन 1947 में भारत विभाजन के बाद सब–कुछ छोड़कर दिल्ली आना पड़ा । बाद में कुछ दिन मसूरी में बिताए । आगे चलकर अम्बाला में नए सिरे से बसने के लिए चलें आए । सन 1948 में भारत सरकार द्वारा प्रकाशित " विश्व–दर्शन" के संपादक के रूप में दिल्ली चले आए । सन 1954 तक उसी पद पर रहें । सन 1955 में पब्लिकेशन्स डिवीजन ,ओल्ड सेक्रेटेरिएट, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका "आजकल" के संपादक के रूप में सन 1963 तक काम किया । सन 1964 में हिंदी की प्रसिध्द्ध पत्रिका " सारिका " के संपादक पद हेतु मुम्बई से आमंत्रित किया तो मुम्बई चले आए । सन 1967 तक उस महत्त्वपूर्ण पद पर रहें । बाद में निवृत्त हुए ।

मैं – उनसे आपका विवाह कब और कैसे हुआ ?

स्वर्णलता – हमारा विवाह 22 जून 1936 में आर्य समाजी पद्धति के अनुसार हुआ । तब मैं बनारस हिंदू युनिवर्सिटी से इंटरमिडिएड की परीक्षा देकर आयी थी ।

मैं – आपके परिवार की जानकारी बता दीजिए ।

स्वर्णलता – मेरे पिता धनिराम थापर पेशे से वकील थे । हम पजांब में लुधियाना के रहनेवाले थे

मेरे पिताजी ने गव्हर्मेन्ट कॉलेज से बी.ए.,एल.एल.बी. की उपाधि ली । सिमला में प्रैक्टिस करने के बाद दिल्ली चले आए और वही अपनी वकीली शुरू की । मैं उनकी सबसे छोटी बेटी हूँ । मेरी तीन बहनें और दो भाई हैं । बड़ी बहन सत्यवती

महात्मा गांधी की शिष्या थी । दूसरी उषा और तीसरी कौशल्या । इन बहनों ने स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया था और इसी कारण उन्हें जेल भी हुई थी । मेरा बड़ा भाई अमरनाथ और चंद्रगुप्त जी कुरूकुल में साथ–साथ पढ़ते थे । वे दोनों दोस्त थें । मेरे छोटे भाई का नाम सत्यपाल है ।

मैं – आपका वैवाहिक जीवन कैसा बीता ?

स्वर्णलता – हमारा वैवाहिक जीवन अच्छी तरह बीता । छोटे–मोटे झगड़े जरूर होते थे मगर हमारा पारिवारिक जीवन बहुत अच्छी तरह बीता । चंद्रगुप्त जी ब्रॉड माइंडेट के थे ।आर्ट के प्रेमी थे । मैं जब ड्रामा में हिस्सा लेती थी तो उन्हें कोई एतराज नहीं था । उन्होंने मुझे दिल्ली के प्रसिद्ध डांसर उदयशंकर के क्लास में डान्स सीखने के लिए भेजा था । वे कला के प्रेमी थे । उन्हें फोटोग्राफी का भी शौक था । वे बिल्कुल आजाद व्यक्तित्व के विचारक थे । इसीकारण कभी भी किसी प्रकार का बन्धन नहीं लगाते थे । "हर एक को अपनी–अपनी चॉइस के अनुसार जिंदगी व्यतीत करनी चाहिए " वाले विचार के थे वे । बिल्कुल आजाद खयालात के आदमी थे । बच्चों के प्रति उन्हें बहुत प्यार था । इसी कारण पारिवारिक जीवन बहुत अच्छी तरह से व्यतीत हुआ ।

मैं – आपके बच्चों के नाम और जानकारी दीजिए ।

स्वर्णलता – हमारी दो बेटियाँ ही हैं ।सबसे बड़ी रेवा यहाँ (ठाना में (मुम्बई) अपने पति के साथ रहती है । उसके पति मेहता आर्मी से निवृत्त हो चुके हैं । मैं भी यहीं उन्हीं के साथ रहती हूँ । रेवा की तीन लड़कियाँ हैं जिनकी शादियाँ हो चुकी है । हमारी छोटी बेटी रानी अपने पति के साथ अमरिका में रहती है । उसके पति साइंटिस्ट है । उसके एक लड़का और एक लड़की है ।

मैं – चंद्रगुप्त जी के मित्र परिवार के संबंध में जानकारी दीजिए ।

सुवर्णलता – वे मित्रता जल्दी बनात थे इसी कारण उनका मित्र परिवार बहुत बड़ा था । उनके मित्रों के नाम सत्यकेतु, सत्यकाम , सत्यव्रत और अमरनाथ हैं । सत्यवती मलिक और दिना पाठक उनकी अच्छी फ्रेंड थीं । उनके साहित्यिक मित्रों में से अज्ञेय , बनारसीदास चतुर्वेदी, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी , बलराज साहनी, भीष्म साहनी, मन्मथनाथ गुप्त आदि प्रमुख हैं ।

मैं – विद्यालंकार जी की खास आदतें कौनसी थीं ?

स्वर्णलता – वे बहुत सोचते थे । किसी बात का आयडिया आया तो तो टायटल या शीर्षक उसी वक्त अपनी डायरी में नोट करते थे । पिकनिफ, शहर घूमने के बहुत शौकीन थे । पहाड़ पर जाना, सैर करना, पैदल चलना, घूमना , फिरना ,घूमते–घूमते मित्रों के साथ बातें करना आदि के शौकिन थे । दोस्ती करने की आदत थी । फालतू, बेकार लोगों के साथ बातचीत करना उन्हें पसंद नहीं था । कभी भी बेकार वक्त निकालना उन्हें पसंद नहीं था । हर समय किसी न किसी काम में लगे रहते थे ।

मैं – विद्यालंकार जी का स्वभाव कैसा था ?

स्वर्णलता – बहुत ही प्यारा और खुशदिल तथा नरमदिल स्वभाव था । साथ ही गुस्सैल भी थे । बिगड़ जाते तो बहुत बिगड़ जाते थे उन्हें यह स्वभाव विरासत से ही मिला था उनके पिताजी भी गुस्सैल थे । पर उन्होंने अपनी बेटियों पर कभी गुस्सा नहीं किया । बच्चों से बहुत प्यार करते थे । जिनके प्रति वे प्यार करते थे । उनकी निंदा कभी सहन नहीं करते थे । अपने दोस्त ,गुरू तथा आदरणीय व्यक्ति की निंदा कभी सहन नहीं करते । वे स्वयं कभी किसी की निंदा नहीं करते । वे गांधीजी के विशेष प्रेमी थे ।राजनीति की चर्चा वे बहुत जोर शोर से किया करते थे । उनका राजनीति का बहुत गहरा अध्ययन था । राजनीति की चर्चा में उन्हें कोई हरा नहीं सकता था । वे राजनीतिकबहस में हमेशा जीत जाते थे । अपने देश की भूमि पर उन्हें बहुत प्यार था । वे आस्था के प्रति बहुत सतर्क थे । हरिवंशराय "बच्चन" जी के स्नेही थे । वे बहुत ही संवेदनशील स्वभाव के थे । सन 1984 में जब प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या हुई तब वे हमारी छोटी बेटी रानी के पास अमरिका में थे ।वहाँ हत्या का समाचार सुनकर बहुत डिस्टर्ब हुए । "ऐसा क्यों हुआ ? नहीं होना चाहिए था " ऐसा कहकर बहुत चिंतित हो गए । वे बहुत ही भावुक थे । उस वक्त तुरंत ही भारत वापस आए । यहाँ भी खूब चिंतित रहे । उन दिनों वे बहुत ही अस्वस्थ रहते थे ।

मैं – चंद्रगुप्त जी को कौन-कौनसे शौक थे ।

स्वर्णलता – उन्हें घूमने का बहुत शौक था । दप्तर से आते ही आराम करने के बजाय घूमने के लिए जाना पसंद करते थे । वे कभी थकते नहीं थे । हमेशा फूर्तिले रहते थे । उन्हें पैदल चलने का बहुत शौक था । एक बार मुझे भांडुप से मुलुंड तक पैदल लेके चले आए । वे समय की पाबंदी कभी मानते नहीं थे । दप्तर के लिए दस बजे जाना पडता था मगर 11 से पहले कभी नहीं गए । अपने काम पर उन्हें बहुत भरोसा था । अपना कोई भी काम लगन से किया करते थे । आफिस में देर से जाने के कारण उन्हें वहाँ से कई लेटर आए तो उनका यह जवाब रहा – एक संपादक को किसी समय के दायरे में बाँधा नहीं जा सकता । मैं कब आता हूँ कब जाता हूँ इससे कोई मतलब नहीं । मतलब सिर्फ मेरे काम से है बस । वे परदेश जाने के बहुत शोकीन थे । वे सबसे पहले स्वीडन में हमारी बेटी रानी से मिलने गए । बाद में उन्होंने आस्ट्रिया, जर्मनी, फ्रान्स, पेरिस, लंडन तथा अमरिका की यात्राएँ की । वहाँ के नेता , लेखक, कवि तथा अन्य संस्थाओं से मिलें । उनके साथ विविध विषयों पर बातचीत की । वे अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के गहरे अध्येता थे । अमरिका , रूस और युगोस्लाविया की सरकार ने उन्हें हिंदी लेखक शिबिर के लिए दो दफा आमंत्रित किया था ।

मैं – क्या चंद्रगुप्त जी भगवान को मानते थे ?

स्वर्णलता – वे परमात्मा को याद किया करते थे । वेद तथा मंत्र पठन करते थे । जाति-धर्म निरपेक्ष थे । वे नास्तिक तो थे नहीं । हरिद्वार में पंड़ितों को धर्म में काफी फ्रॉड़ करते हुए देखा था अतः उन्हें इस बात के लिए उन पर बहुत गुस्सा था ।

मैं – उन्हें साहित्य लेखन के बारे में आपकी कोई सहायता मिली ?

स्वर्णलता – नहीं । साहित्य लेखन में मेरी उन्हें कोई सहायता नहीं हो सकी । मगर उनसे ही मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला । उनके कारण ही साहित्य पढ़ने , चिंतन करने की आदत लग गई ।

मैं – चंद्रगुप्त जी का साहित्य के बारे में दृष्टिकोण कैसा था ?

स्वर्णलता – साहित्य के कानूनों और अपरिवर्तनशील परिभाषाओं से उन्हें घृणा थी । वे कलाकार या साहित्यिक के लिए किसी भी प्रकार का बन्धन लगाने के खिलाफ़ थे । साहित्य की परिभाषाओं पर बहस करने की जगह मौलिक साहित्य के अध्ययन की महत्ता उनकी राय में बहुत अधिक थी ।

मैं – उनका साहित्य पढ़ कर आपको केसा लगा ?

स्वर्णलता – वे जो अनुभूत करते थे उसी का चित्रण अपने साहित्य में करते थे । साहित्य में बहुत सच्चाई के साथ लिखते थे । जो कुछ महसूस करते थे वहीं उनके साहित्य में आता था । बहुत गहराई के साथ लेखन करते थे वे । उनका साहित्य लेखन राष्ट्रीय तथा सामाजिक दृष्टिकोण या विषय पर आधारित रहा है । वे नेचर को खूबसूरती के साथ तैयार करते और लिखते । उनका साहित्य समय से बहुत आगे था अतः आज उनका साहित्य बहुत जरूरी है । अपनी बात वे किसी पर भी लादते नहीं थे ।उनका साहित्य दूसरों को सोचने के लिए मजबूर करता है ।वे चाहते थे कि लड़कियाँ बहुत पढ़ें लिखें । वे स्त्री–पुरूष भेद को कभी नहीं मानते थे । अपने जमाने से वे बहुत आगे थे ।

मैं – उन्हें साहित्य लेखन के लिए प्रेरणा कहाँ से मिलती थी ?

स्वर्णलता – साहित्य प्रेरणा के बारे में देखा जाय तो उनका लेखन अंतःप्रेरणा से उपजा हुआ था। जब वे अठारह साल क थे तब गुरूकुल क अॅन्युअल प्रोग्राम में उन्होंने अपनी पहली कहानी "मेरे मास्टर साहब " पढ़ी थी । वे रूसी राइटरों से बहुत प्रभावित थे ।

मैं – क्या उनके नाटक रंगमंच पर खेले ला चुके हैं ?

स्वर्णलता – उनके नाटक " देव और मानव " तथा " न्याय की रात " रंगमंच की दृष्टि से लिखे गए थे । "देव और मानव " नाटक श्री इंद्रलालदास के निर्देशन में लिटिल थिएटर ग्रुप , नई दिल्ली द्वारा रंगमंच पर खेला गया और "न्याय की रात " पंजाब ड्रामा लिग के मुख्य निर्देशन प्रिन्सिपल श्री गुरूदत्त सोंधी के निर्देशन में लाहौर में सुप्रसिद्ध एअर थिएटर में रंगमंच पर खेला गया ।

मैं – जीवन के प्रति देखने का उनका दृष्टिकोण कैसा था ?

स्वर्णलता – जिंदगी के प्रति उन्हें कोई शिकायत नहीं थी । "जीओ और जीने दो " के तत्त्व में विश्वास रखनेवाले थे वे । आजाद व्यक्तित्व के विचारक थे । वे कट्टरवादी नहीं थे । जो सोचते थे वही करते थे । उन्होंने रूस की यात्रा के दौरान सोचा कि वहाँ जाने पर जो चीज पहले खाने के लिए सामने आएगी खा लूँगा वहाँ मांस आया तो खा लिया । इससे पूर्व वे शुद्ध शाकाहारी थे । मन से बहुत यंग थे । असंभव उन्हें कोई बात नहीं लगती थी । सभी कार्य तत्परता से करते ,स्वाभिमानी थे ।

वे जीवन में शिक्षाव्यवस्था या एज्युकेशन को बहुत महत्ता देते थे । उनकी राय में इस हिंदुस्थान के लोगों को बाकी कुछ मिले या ना मिले पर एज्युकेशन मिलना बहुत जरूरी हे । वही सभी समस्या पर एकमात्र इलाज है ।

मैं – उन्हें कौन–कौन से पुरस्कार मिलें ?

स्वर्णलता – सन 1960में उन्हें पंजाब साहित्य क्षेत्र का पुरस्कार मिला । पंजाब साहित्य क्षेत्र ने उन्हें दो बार पुरस्कार दिया । दिल्ली साहित्य क्षेत्र की ओर से भी उनको पुरस्कार मिला ।

मैं – चंद्रगुप्त जी की मृत्यु कब, कैसे और कहाँ हुई ?

स्वर्णलता – उनकी मृत्यु 14फरवरी 1985 को सुबह पाँच बजे ठाना (मुम्बई) में श्रीरंग सोयाइटी में हुई । उनकी मृत्यु हँसते ,बोलते , खाते–पिते हुई । उन्हें ना कोई बीमारी थी, ना वे बिस्तर पर पड़े । उस दिन सुबह साढ़े चार बजे छाती में दर्द महसूस किया और साँस लेने में कठिनाई हो रही है की शिकायत की तो तुरन्त डाक्टर को बुलाया उन्होंने ही डाक्टर से कहा कि आप बचा सकते हैं तो बचा लीजिए । डाक्टर ने काफी कोशिश की मगर कोई फायदा नहीं हुआ । उनकी हृदयगति बंद हो गई और मृत्यु हो गई । मृत्यु से पूर्व वे बिल्कुल तंदुरूस्त थे । उन्हें कोई व्यसन नहीं था । अंत तक उन्होंने अपना काम स्वयं ही किया । वे मुत्यु से एक साल पहले नैनिताल की सैर करके आए थे ।(.... और यह कहते–कहते स्वर्णलता जी का गला भर आया । इसके आगे कोई और प्रश्न पूछना मुझे उचित नहीं लगा । केवल उनके इस आश्वस्त कथन कि " यदि भविष्य में कोई जानकारी या आवश्यकता लगती हो तो अवश्य लिखे अथवा मिलें " को सुनकर मैंने उनसे प्रमाण करके विदा ली)